## 1937G Prakrit Roots of Modern Hindi

130 set Adamu कर (91 वर्तमात - हिन्दी य सम इस उक्तामारिक में कर्तिय सम्हित भी क्रार राष्ट्र जनारि है। दूरी न स्मार कामानि क्रिमे दिना है कि स्मार मान प्रतिह क्रिया प्रमा निका ने व क्षिता कार्या है अर्था व आक्रमें देशी हैं सेस्व की अन्त ( इसी कार में अन्ता कार्या का के 'mar दिस्ता मेंतुतान प्राहृती नाति मेत्वः । १६ अवतेला जब दम दम देन केती अक्रों के वारास्तरिक वाक्क्य की देशके हैं ले महकार किरमेक्यून्यक राजातीहै, ते में दोके ती माधारी - एउटी आकां है किलाका हम हैं। ठोते एक भी का बादा भी ही में संस्कार े किरामित के मिर हमा अर्थ भेतर में कर में कार मिर के किरा है क्रियाता राजा नाम मार्ग मेर किर्म कार्म के ती मेर कार मार्ग कार मा मा विलामा, मुक्ली, मीज आर्द बाले (देवा) भी गासून है उत्पत्त है नानी ने के कि का का करेंगे के अनुसन होता कि मास के प्रथेत ने कि के कि कि हो है के प्राप्तित और दूस्ता है स्मारित कि भी जो में भी जह , अपने निर में नहीं के होते जो किए, अविशिक्त तम के अवकि हम है अर्ग कर खोर रा-गटन उस महोता दूप संस्कार किस दूस दूप में न तम इसी असर असर भारत के के दूध सा अरे कुसम किस है, जो सम के स्वापन कोरों में के के कर भी भाषा भी लही के जहुर भाषा कर जहीन्थी । बिल्लिंग ने मिने के कार में ही ने कि अपने अप हैं निवार ने ने कार भी उत्तर विकास्य में किलान न्यान कार्यद्रमाहरू कार्यक्षार्यस्य प्रतिन (दुभा , उन्होंने उस प्राकृतिय हमनाली आका मा हो कार ह्या प्रास् का किया । असे दिला कारों के स्वामिक अद्याम है। विर के वाल अही में क दली कोर मही पड़े अहमें उत्तर कार लें कार क्रिकेन क्रिन्टिंट क्र लंकर माला आरेम महिला किर्ली भार में खुराजित मिस्टूर नेन में हमें उनमें नाति होने कार्र त्रमण नपा एक अञ्चलंगित मा अनिकृत गर्मा का रेग दावराज

consar & . 18 gard went some in sign ne sin (Aprillan केश - अत हैता है रक्ति में राजान के राजान करा है जर अभी किए कि का - तमा वीत्रे सामानाः । अभीता में साम् दे । कि में उसी हुन अगरे हे लान में जीवन के जारति के हमा के उनमें अना (का सह जों हे तो को (वेत हैं (अ अदीमूं ए स्कर्म ने के जिसने नहीं) उत्ति उर्व दनत्ति न्यर्मितामा । देशी मार कराम सेपाराने कोलांक के कि है। हारू के केरा मान न उत्तर । तं, तो यह पहार पर किटा दुल हात के नाम है के एक शिका

वात भी आफ्री हे लाभाविक कप मा गाम प्राकृत में होस्मारित में

मा माप शंस्त्व मित्र हिमा जा की राम लाजाबर भार कला नाम के कावन जी तरिक्रें ने भी मिनार दे । देशिक - अकरते का ता की विद्यान नाम्पार भाग ते अनी (गड़ उन्हें नाम महामायर्म लिला है कि -

लामाओं यां नामा निर्तात एता म मेंपत नामाते । महारा हात्रात मार्ड महाराम कार्य मार्ड महाराम कार्य

ं अस्ति द्वी महत्वामा के द्वा ए के के ने त्वा कि का मार्ट के अग ( उसी के निकलने हैं। किये जल माउद में ही निका कार्य कर मातार कार्य वाधाराम के लिए किस्सान हरें न "

मराकार में इस मधन है यह कार मिनान्य प्रमारेत हो में दें कि जिल्लामानी सर्मामा भी मनती हैं।

नवी कारास्त्री मे जिस्तात् ता अनोप्या के अपनी निष् लिंग-महार्थित हम्मारों करा है कि प्राप्त भागरी लेखने भाग भी में कि

यर् भोरतः दिल मंस्कृतसा हि ६ १० , जिलायु पत्ने पते . यन्त्रीत प्रावनिश्व प्रमास्त्राणां रितः।

मनं न्यानियं वां सितात स्तारम् वं यद्वा -स्तारकार्य कारिकार्य प्रमुख्य के विकास कार्य अंक मारक समानिक प्रमुख्य इह स्तार कारी सिता कार्य एक्टर अर् दंदर के किए के मार्ग की के एक हाल कि के मी आका ही हा, उत्तर मेर विद्याला अभी न करी किलारी

उनी शहत माने जारे के ही बेली की कियी जी ही ही ही । इनमें इति कि शिले जो के के संपा का में साम मिल कि कि तथा ही मान प्रित में में को जो जो के के क्या में साम मिल के के कि हो माने के का मानी अपक्रिकों के माने में माने के का मानी अपक्रिकों के माने के का मानी अपक्रिकों के माने के

हरिती , अञ्चतया अपनेप	संस्हत
पीहर , पाउटर	~
200	पित्रगह ,
मोसी (मारी) , माउ सिया !	मात्रास्त्रमा
रीय , रिन्सर ,	: भरस
बारियां , नानि आ	वानिज
दुउनार , दुउनार ,	
द्वा , दुउठा ,दूठा ,	दिग्ल.
उपना , अप्पणम ।	उत्तरमीयः
र्ना (इतमा) र अत्ता	उथता एतावन
नेत्-लोभी, जानकी कर	नवर्मन
-स्त , न्या	
उसीरते (तानिया। उस्मीयोः,	37AF,
तत्री (लन्डा) तन्त्रिआः	तस्रयंका
और , अउर, अ	उनवर,
दीम (पश्च) उत्तम , (प	यु, म्लाक भारते अवसे उम्मे

व्या व्या व्या व्या विश्व के विश्व के क्षेत्र के महमानी भोगति स्प स रेजा है। क्षेत्र के महमानी भोगति स्प स रेजा है। विज्ञा है। विज्ञा है। विज्ञा है। विज्ञा है। क्षेत्र के क्षे

अन कुट्य रेक्ने एक्के ने उपाहमा दिएना है हैं , विने ने ने में में महन निकार ने उसना हुए क सहकारकी तोरोना भाषा मेंगों जह जाते हैं (वहां ब्रासम तक्ता कीर कत्मम (इनार न अक्र उनार राजाना) ररप रिकामन ना हिए। मि

(A) नाना विभिन्नाभाषाक्षेत्रे नेशन्द

प्रकार - मह भरती मा शन्द है जो मिकर केट का वन्ती वरे अपह भे. उत्तर् अप संस्वास्य म्यूर्य में में व्यार हैं लंहनारे अविश्विष्ठ वाने मोगानना । हो वा है

आफ़त = यह धोस्ट्रत अपिर शब्द दा आणेश धर है। मीय - मह जिल्हत लाहत मीद भाष्य हा मोक्स कर अनोमर - उसमा हिल्ह्वास्य मुनामार औ (४) क्रायर्प मनामन म

अपार्भिष ज्ञामित ज्ञाम दे हैं

अद्रमट- इत्रालेल्ड्न्स्प अपनार् और छाड्नस्य अपनापत र जीव मार्थ अपारंग होने पर अप्यवास अपा करहेगा. मी ज्जर = (Solder) यर अंग्रेजी आक्षा का रा क है जिलका परे किस निरोध का विकास माना राके ना ता मिलारी है कर मिन्दी के अपनिकट लेगाना पर लंदन के भीन्द्रीय अमेर वाकुत के लोडीर पास्त हा अनामा ATT & HE AR SER (Speaking) 8000-न्द्राम्या देखने के विषदेव हो आर्थ है। मीन शका-न्याए के अलुकार मह शब्द की का का तो की लोह या स्तेलु बोला आयगा जिलानमानिता लः।

के किहा के केरे स्कार में उसे शीकीर किंग्डीर की अब अंतर काले विन में पहिली में लहता। ) मा मिला मान्या मानी मार्थ

नियवल -( भी हीं लाती है के किया अपित माराया के लें किया ही है अर्थ र्भ प्रमुक्ति है। यह शब्द भी क्रानेक वल ' वासुन मा अधारु क्ला। महत का कोरे से विकार ने कत्री। शास्त्र दे भीनेखंबरका अपे ही रार्टी अल्प कलेंगा

मेरील = मर लाल रेन मे अर्च भा मनम्पान् ही जो ।ने

' हरी कुल 'संभीयाल या सं रीम्रल मा उत्पारिक रहिंद

इम्छम् रिवन ही हरा हुमा रिक महाने हैं। का बजार नतीं न भी स्वारि हुई हिन्दी भारत (अमे का ती। त्री कि बाहों की उत्तरभारत स्ट्रकात क्री जिए । जिलते आ ने हिलता निरेक होगा ; कि रमड़ी नीभी रे महले क्रम से वाहें में कि कर मी हमार मिला है का है का के कर के का में किया है आते हैं। अवारी ही प्रकालन भी । अन मोता है नायक की कार्म लेग प्राष्ट्रत अनामेषा आमा केम्रोका देश कड़ी मुगमता ले लगहते ले है। हिन्तु इस वर्तमान के जुन्मी ही हिन्ती में में होने इनमें हाला र पटन मेंमा है दि अनुवाम दिन्ती हमें हनारों के पर दूर के मारी माना अन्य हमं इत क्या जेत किया को मान हता अपारे का भार करें भी अभवाद्या मोभी भी नहीं नाम करती है न नारा मुलाहिना and State of the Charles of the contractions ा. उत्तानि हिन्दी है किएमार एक - मीन हिन्दी भूग -क्रानीहिनी — द सहां जार वा जवह ! नाइ या नाम एक पा शहर भी में हैं नवीन हिन्दी-जन्मिक्रिके के जन्म के अने भी के प्रकृति के जन्म के जन्म के प्रकृति के जन्म क 90 A B. B. - A Th. O. तरं ताम ने ने ता है जे मू गतीत. हि. - ता का कामा ह ्रम्पडा नहाम स्वाप्त के पाड श्रेस् का सम्बर्ध अमान्या स्वर्ध के मेर्स के स्वर्ध राम 'कमर्ट हैं। सार्व के मेर्स के स्वर्ध प. हि. - अपडो रंगार मा दि. - अपड़ा रोग्वार्ट राज है, मा अमरे कित्र में महिंदी छ हि. \_ रोटी कानइ - येरी शब्द में बिल्कुल शहर पोड़ा) इसी हि. - रोटी कार्यह . जार पाल्युल अस्त पाड़ राजा है न्द्रितासप है बीम ही। शुन्त के विकास के किया है। शुन्त के विकास क 

नान क्रिम्ब स्टिकां न्यां-नार्यस्य महिकारः। तथां स्वाननेन कारः विद्यानाः छात्रे क्राः ॥ अधार्-नेनक क्रि अलाहिंद् मूर्य और नारात्र के कारण स्वेत के उन्हें के नोगों के लखता दर्व के नार्यस्य मा नाम नार्य के लिए महिंदीने ते आगम-विद्यानों के छात्र सम्माननार्थ

उन्हें र का ज जिल भाषा में में पति ने ना मान बही में (न में का को को पति ने ने ने ने नित्र का के को पति ने मान बही में (न में का को को मान बही में (न में का को को मान को कि मान को को मान के मान के